International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 200-201
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-06-2020
Accepted: 15-09-2020

डॉ0 मधुकराचार्य त्रिपाठी
असि0 प्रो0, इन्द्रकली स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गोसौरा खुर्द, मेजा, प्रयागराज, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 मधुकराचार्य त्रिपाठी
असि0 प्रो0, इन्द्रकली स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गोसौरा खुर्द, मेजा, प्रयागराज, भारत।

"बालरामायणम् एवं भवभूति के रूपकों का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ0 मधुकराचार्य त्रिपाठी

प्रस्तावना

'बभूव वल्मीकभवः पुरा कविस्ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रतिं राजशेखरः।।'[1]

अपने पूर्ववर्ती कवियों में से राजशेखर भवभूति से सबसे अधिक प्रभावित हुए ऐसा इस श्लोक से स्पष्ट है। भवभूति के तीनों रूपकों महावीरचरित, मालतीमाधव तथा उत्तररामचरित से राजशेखर प्रभावित हुए है। बालरामायणम् के चतुर्थ अङ्क में दशरथ की उक्ति है– "(समन्तादवलोक्य) आर्य मातले। महावीरचरितावलोकनापरायते चित्ते न किञ्चित्प्रतिभाति"। अर्थात् महावीरचरित देखने से पराधीन हो गए चित्त में अब कुछ सूझता नहीं।[2] यहाँ पर "नायकमुखेन कविरेव मन्त्रयते" न्याय से ऐसा लगता है कि राजशेखर महावीरचरित से अत्यधिक प्रभावित हुए।

भवभूमि की नाट्य शैली का अनुकरण राजशेखर के कतिपय सन्दर्भों से दृष्टिगोचर होता है, यथा – भवभूति ने महावीरचरित के प्रस्तावना में कहा है कि "वीराद्भुत प्रियतया रघुनन्दनस्य धर्मद्रुहो रमयितुश्यचरितंनिबद्धम्" अर्थात् मेरी रूचि के अनुसार इस रामचरित में वीराद्भुत रस है।[3] इसी प्रकार राजशेखर ने भी प्रस्तावना में ही कहा है– "वीराद्भुतप्रायरसे प्रबन्धे लोकोत्तरं कौशलमस्ति यस्य" अर्थात् मेरा प्रबन्ध वीराद्भुत प्राय रस वाला है।

भवभूति ने लिखा कि – "यस्य भगवतस्त्रेशङ्कवं शौनः शेपरम्भास्तम्भनं चेत्यपरिमेयमाश्चर्यजातमाख्यानविद आचक्षते।"[4] अर्थात् जिन भगवान् के त्रिशंकु – सम्बन्धी, शुनःशेप– सम्बन्धी एवं रम्भा के निश्चलीकरण आदि अनेक आश्चर्यों को आख्यानवेत्ता कहते हैं। शंकर के चरित्र के बारे में राजशेखर ने भी कुछ ऐसा ही वर्णन किया है– "यद्वा यस्य लैङ्गोद्भवं भैरवीयं तौम्बुरवयौमापतमार्धनारीश्वरमैन्दुशेखरमान्तकान्तकं कालकूटीयं जन्भारिभुजस्तम्भनं दक्षमखोन्मथनं मान्मथमथनं त्रैपुरमन्धकासुरीयमित्यपरमप्यपरिमेयं चित्रं चरित्रजातमाचक्षते।"[5] अर्थात् जिनके लिङ्ग से उत्पन्न होने, भैरवरूप और तुम्बुरू – सम्बन्धी, पार्वती से विवाह–अर्धनारीश्वर रूप एवं चन्द्रधारण–सम्बन्धी, यम–तिरस्कार–विषपान इन्द्र के हाथों के निश्चलीकरण–दक्ष सत्रध्वंस–कामदहन–त्रिपुरविनाश तथा अन्धकासुर–सम्बन्धी एवं अन्य भी अनेक आश्चर्य योग्य चरित्र कहे जाते हैं।

महावीरचरित के सप्तम अंक के मिश्रविष्कम्भक में विषण्ण नें लंकानगरी को अलकापुरी सान्त्वना देती है, ठीक यही बालरामायणम् में भी है। भवभूतिं "ततः प्रविशति शोकाकुला लङ्का"[6] कहा है तो राजशेखर ने इसे "ततः प्रविशति सशोका लङ्का" कहा है। लङ्कानगरी के रूदन में दोनों में समानता है, यद्यपि लङ्का के विपत्तिवर्णन में शैलीवैशिष्ट्य के कारण राजशेखर आगे बढ़ गए है। सीता की अग्निशुद्धि तथा पुष्पक द्वारा राम के लौटने के उपक्रम की सूचना दोनों नाटकों में समान है। इसी प्रकार दिव्य यात्रा के अन्त में भवभूति ने लिखा कि – "ततः परस्मादगम्या मादृशां भूमयः तो राजशेखर ने भी लिखा है कि – अतः परमगम्या अस्मादृशां भुवः।"

कहीं –कहीं शब्दों की अतिशय साम्यता भी आश्चर्यचकित कर देती है। यथा–

1. "प्राचेतसो मुनिवृषा प्रथमः कवीनां", महावीरचरित, 1. 7
   तथा – "प्राज्ञः प्राचेतसो मुनिः", बा. रा. 1. 9,
   "स खलु निखलेऽस्मिन् कविवृषा" वही. 1.
   प्रथमः कपीनाम् वही, 8.67

2. "अपरिमेयमाश्चर्यजातमाख्यानविद् आचक्षते", महावीरचरित – पृ. 10
   तथा– "अपरिमेयं चित्रं चरित्रजातमाचक्षते", बा.रा. पृ. 46
3. "सावित्रस्य मनोर्महीयसि कुले तेषामवाप्तात्मनाम्' महावीरचरित–1. 25
   तथा – "सावित्रान्मनुतो महीयसि कुले ये जज्ञिरे क्षत्रियास्तेषाम्", वा.रा. 3.70
4. "वैकर्तनकुलकुमारः" महावीरचरित पृ. 25
   तथा – "विकर्तनकुलकुमारः", बा.रा.पृ. 123
5. "भीषणा हताशा", महावीरचरित, पृ. 35
   तथा–"भीसणाणं वि भीसणा हदासा
   भीषणानामपि भीषणा हताशा", (संस्कृतच्छाया) बा.रा. पृ.85
6. "विश्वामित्रात्प्राप्य विश्वस्य मित्रात्", महावीरचरित 1. 50
   तथा – "भगवान् विश्वस्य मित्रं विश्वामित्रः", बा.रा. पृ. 84
7. "दोर्दण्डाञ्चितचन्द्रशेखरधनुः", महावीरचरित 1.54
   तथा – "अस्मद्दोर्दण्डषण्डाञ्चित", बा.रा. 1.46
   "दोर्दण्डद्वितयाञ्चितोन्नतधनुः", वही. 4.20
8. "एह्येहि वत्स रघुनन्दन रामभद्र
   चुम्बानि मूर्धनि चिराय परिष्वजे त्वाम्", महावीरचरित 1.55
   तथा – "एह्येहि वत्स रघुनन्दन रामचन्द्र चुम्बानि तऽद्य वदनं करचूचुकेन"। बा.रा. 10.65
9. "पौलस्तयो विनयेन याचत इति श्लाध्येऽपि योऽनादरः",महावीरचरित 1.59 तथा– "पौलस्त्यः प्रणयेन याचत इति श्रुत्वा मनो मोदते", बा.रा. 2. 20
10. "ततः प्रविशति शोककुला लङ्का", महावीरचरित पृ. 296
    तथा – "ततः प्रविशति सशोका लङ्का", बा.रा. पृ 439
11. "परिषदियमृषीणामत्र वीरो युधाजित्
    सह नृपतिरमात्यै रोमपादश्च वृद्ध", महावीरचरित 3.5
    तथा – "परिषदियमृषीणामेष वृद्धो नरेन्द्रः", बा.रा.1.60 आदि

संस्कृत के कवियों में भावप्रवणता और गाम्भीर्य की दृष्टि से महाकवि कालिदास के बाद महाकवि भवभूति का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। कुछ दृष्टियों से भवभूति कालिदास से भी ऊंचे हैं। "उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। वस्तुतः उत्तररामचरित के कतिपय आदर्श ही ग्रहीत कर पाए हैं, यथा – लव एवं चन्द्रकेतु के युद्ध में पौराणिक शैली के पावकास्त्र, मेघास्त्र तथा वायव्यास्त्रों का प्रयोग उत्तररामचरित में दृष्टिगत होता है तो बालरामायण में लक्ष्मण मेघनाद युद्ध में दिव्यास्त्रों का विशिष्ट प्रयोग वर्णित है। यत्र–तत्र शब्द–साम्य भी उपलब्ध होते हैं, जो निम्न हैं–

1. "क्रोधस्य ज्वलितुं धगित्यवसरश्चापेन शापेन वा।", उत्तररामचरित –4.24
   तथा – "तेनाभ्युत्सहते ममैष युगपच्चापाय शापाय च", बा.रा. 1.52
2. "अन्धतामिस्रा ह्यसूर्या नाम ते लोकास्तेभ्यः प्रतिविधीयन्ते य आत्मघातिनः",
   उत्तररामचिरत पृ.102
   तथा – "असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।"
   तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।" बा. रा. 2.32
   ईशावास्योपनिषद् – 3
3. 'वृद्धास्तेन विचारणीयचरिताः उत्तरामचरित 5. 35
   तथा– "गुरवोऽविचिन्त्यचरिताः", बालरामायण 4. 33 आदि

यद्यपि कि यायावरीय राजशेखर की रचनाओं पर उनके पूर्ववर्ती कवियों, नाटककारों जैसे भास, कालिदास, भर्तृमेण्ठ, हर्ष आदि का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है तथापि यह निर्विवादरूप से कहा जा सकता है कि राजशेखर में परिष्कार, सुकुमारता और नई विद्या को जन्म देने की कला है। यही कारण है राजशेखर ने अपने जीवन काल में सहृदयों व कवियों के समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। उनके बाद कवि धनपाल ने उनकी प्रसन्नपरिपाक वाली वाणी की सराहना में सर्वथा सत्य कहा है–

"समाधिगुणशालिन्यः प्रसन्नपरिपक्त्रिमाः।
यायावरकवेर्वाचो मुनीनामिव वृत्तयः।।"

सन्दर्भः

1. बालरामायणम् 1. 16
2. वही– पृ. 162
3. महावीरचरित, 1.6
4. वही पृ. 10
5. बालरामायणम् पृ. 46
6. महावीरचरित पृ. 296
7. बा. रा. पृ. 439